Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A - II Sem, Philosophy, ... trends

"Avachhedaktavada" 1

('अवच्छेदकता')

'अवच्छेदकता' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग नव्य न्याय के प्रवर्तक गंगेश उपाध्याय ने किया। अवच्छेदकता शब्द 'संस्कृत' भाषा के 'छिद्' धातु से बना है। छिद् का अर्थ छेदना, काटना, तोड़ना, टुकड़ा करना आदि है। अतः अवच्छेदकता का अर्थ वह प्रक्रिया है जो किसी वाक्य को काटती, छेदती या टुकड़े करती है और छेदनेवाला, काटनेवाला, तोड़नेवाला या टुकड़ा करनेवाला को अवच्छेदक कहा जाता है। यदि एक सरल रेखा को दो या तीन भागों में काट दिया जाय, तो इसका तात्पर्य है कि उस रेखा की लम्बाई को छोटा करना अर्थात सीमित करना। अतः अवच्छेदक को सीमित करनेवाला भी कहा जाता है, और अवच्छेदकता सीमित करनेवाली प्रक्रिया या विधि है। यह वाक्य के विश्लेषण की विधि है।

'अवच्छेदकता' की उत्पत्ति के संबंध में एक मनोरंजक किंवदन्ती है। एकबार पं. गंगेश उपाध्याय अपने दालान पर विद्यार्थी को न्यायशास्त्र पढ़ा रहे थे। भीतर रसोई घर में उनकी पत्नी चूल्हा जला रही थी। कच्ची लकड़ी के कारण बेचारी धुएँ से परेशान हो रही थी। बार बार फूंकने पर भी आग सुलगती ही नहीं थी। उधर दरवाजे पर छात्र - शिष्य रट लगाये जा रहे थे यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र वह्निः

(जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है।) पंडितानी जी कलावती ... ही रहे? पं. जी को खाने की ... सूझ गई। उन्होंने एक घड़े में आग रखकर उसे एक पान से ढककर किया। फिर पं० जी के सामने आकर घड़ा रख दिया। घड़ा बहुत ही धुआँ निकलने लगा। पंडितानी जी ने पूछा —

अत्र धूमः कुत्र वह्निः?
(यहाँ तो धुआँ है, आग कहाँ है?)

पंडित जी और विद्यार्थी सभी सन्न रह गये। यह बात तो आज तक सूत्रकार गौतम, भाष्यकार वात्स्यायन, वार्तिककार उद्योतकर, टीकाकार वाचस्पति किसी को नहीं सूझी थी। एक स्त्री ने सभी आचार्यों को खण्डित कर दिया। अब तो इस प्रश्न का उत्तर देना ही होगा, नहीं तो लोग कहेंगे कि पंडित जी अपनी पत्नी से पराजित हो गये। यह सोचकर पंडित जी ने पत्नी को शास्त्रार्थ के लिए नमस्कार, बोले — "यहाँ धुआँ तो आपने कुछ (अपनी ओर से, अर्थात आग से) कटा हुआ है। मेरी प्रतिज्ञा है कि — अत्र मूलाविच्छेदेन धूमः तत्र वह्निः (अर्थात जहाँ धुआँ जड़ से संयुक्त रहेगा, वहीं आग अवश्य

है रहेगी।") पंडितानी जी ने फिर शंका की — जहाँ धुआँ अपनी जड़ (आग) से संयुक्त रहेगा वहाँ तो आग प्रत्यक्ष ही रहेगी। फिर अनुमान की आवश्यकता ही क्या रह जायेगी? तब इस शंका का समाधान करने के लिए पंडित जी को दूसरी अवच्छेदकता लगानी पड़ी। इस प्रकार पंडितजी एक-एक कर अवच्छेदकता लगाते गये और पंडितानी जी कोई-न-कोई कमी दिखाकर उसे काटती गई। अंततोगत्वा जब कई अवच्छेदकताएँ लगाई गईं, तब जाकर सिद्ध हुआ कि

यत्र एतत् प्रकारकः धूमः तत्र एतत् प्रकारकः वह्निः (जहाँ अमुक प्रकार का धुआँ रहेगा, वहाँ अमुक प्रकार की आग रहेगी) इस तरह अवच्छेदकता का सूत्रपात एक दाम्पत्य परिहास से हुआ और नव्यन्याय के प्रवर्तक गंगेश उपाध्याय को तत्त्वचिन्तामणि लिखने की प्रेरणा मिली।

गंगेश ने अवच्छेदकता का प्रयोग दो अर्थों में किया है — गुण के रूप में और सम्बन्ध के रूप में। गुण के रूप में प्रयुक्त अवच्छेदकता अवच्छेदक धर्म कहलाता है। सम्बन्ध के रूप में अवच्छेदकता अवच्छेदक सम्बन्ध कहलाता है। जैसे — "यह घड़ा

06

है।" इस वाक्य में [illegible] पद प्रयुक्त [illegible]

[illegible]

[illegible] यह अवच्छेदक सापेक्ष पद है। यह अवच्छेद्य या जाति विशेष के बिना नहीं होता। अर्थात अवच्छेदकता की प्रक्रिया या विधि और अवच्छेदक जिसे सीमित करता है वह अवच्छेद्य कहलाता है। तात्पर्य यह है कि अवच्छेदकता वह प्रक्रिया या विधि या तकनीक है जिसके द्वारा किसी वाक्य एवं पद का विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषण करने वाला पद को अवच्छेद्य कहा जाता है और किसी पद का विश्लेषण गुण और सम्बन्ध द्वारा होता है। इसलिए गुण तथा सम्बन्ध को अवच्छेदक के रूप में कहते हैं। अवच्छेदक गुण और सम्बन्ध ही नहीं होता बल्कि उद्देश्य और विधेय भी होता है। वस्तुतः अवच्छेदक कोई भी पद किसी वाक्य के अर्थ को विश्लेषित, निरूपित करता है।

[illegible] को विशिष्ट [illegible] का विशेषण [illegible] जाता है। अब [illegible] भी कहा जाता है, [illegible] पदों के खंड-खंड [illegible] को [illegible] करता है।

नव्य-न्याय में [illegible] के [illegible] पृथक् विश्लेषण किए गए हैं। [illegible] दिखाया गया है।

(1) कटोरे में मधु है।
(2) मधु में मिठास है।

यहाँ दोनों वाक्यों में आधाराधेय संबंध (में) एक-सा रहते हुए भी दोनों में भिन्नता है।

कटोरे और मधु में आधाराधेय संबंध होते हुए भी अविनाभाव संबंध नहीं है, अर्थात् कटोरा बिना मधु के भी रह सकता है और मधु बिना कटोरे के भी। दोनों का अस्तित्व पृथक्-पृथक् है। किसी समय कटोरे में मधु डाला गया तब से कटोरे के साथ मधु का संयोग हो गया। लेकिन मधु में मिठास के साथ बात नहीं है। मधु में मिठास अन्तर्निहित या समवेत है। कटोरे से मधु को अलग किया जा सकता है किन्तु मधु से मिठास अलग नहीं की जा सकती। वहाँ अविच्छेद्य संबंध है। कटोरे के अमुक भाग में (अवच्छेदकावच्छेदेन) और अमुक

08 FRI
MAY

सामान्य विशेषण में (सर्वकालीन
— कैवेलन) गन्ध है। किन्तु मिताभि (?
कोई अंश में (सर्व देशावच्छेदेन
और सर्व का (सर्व कालावच्छेदेन)
गोत्र है।

इसी तरह एक दूसरा वाक्य है –
पर्वत अग्निमान है।

स्पष्ट रूप से इस वाक्य का अर्थ समझने के लिए कई प्रश्न उठते हैं।

(1) क्या सम्पूर्ण पर्वत अग्निमान है या उसका कोई अंश?

(2) क्या पर्वत सदा अग्निमान है या केवल इस समय?

(3) क्या पर्वत में अग्नि समवेत है या संयुक्त है?

यदि यह ज्वालामुखी पर्वत है तो प्रथम कोटि के विकल्प लागू होंगे। अर्थात अग्नि सम्पूर्ण पर्वत में सर्वदा समवेत है। यदि किसी सामान्य पर्वत पर आग जल रही है तो द्वितीय कोटि के विकल्प लागू होंगे। अर्थात अग्नि पर्वत के अमुक अंश में अमुक समय में संयुक्त है। केवल वाक्य का रूप देखने से अर्थ स्पष्ट नहीं होता। इसलिए अवच्छेदक लगाना पड़ता है। यदि पहला अर्थ अभिप्रेत हो, तो नैयायिक की भाषा में कहेंगे – सर्वदेशावच्छेदेन

धूमत्व जात्यवच्छिन्न संयोगसम्बन्धावच्छिन्न धूमवान् पर्वतः वह्निमान्। यदि प्रयोग ऐसा विवक्षित हो, तो यहाँ पर्वतत्वावच्छिन्न वह्नित्व जात्यवच्छिन्न संयोग - सम्बन्धावच्छिन्न पर्वतः वह्निमान्।

इस प्रकार दैशिक, कालिक एवं सामाजिक अवच्छेदकताओं के द्वारा सम्बन्धों का निरूपण किया जाता है। अवच्छेदकता का व्यवहार मुख्यतः

क्र. इन प्रसंगों में होता है —

1. उद्देश्यता - विधेयता।
2. विशेष्यता - प्रकारता।
3. आधारता - आधेयता
4. अनुयोगिता - प्रतियोगिता
5. कारणता - कार्यता
6. संसर्गता

(1) उद्देश्यता - विधेयता

पर्वत वह्निमान है। यहाँ पर्वत उद्देश्य (subject) है और वह्नि विधेय (Predicate)। दोनों के यथार्थ संबंध को निरूपित करने के लिए अवच्छेदकता किस रूप में सहायक होती है, इसका कुछ उदाहरण पहले ही किया जा चुका है।

पर्वत अग्नियुक्त है। यहाँ पर्वत में उद्देश्यतावच्छेदक

विधेयता वच्छेदक धर्म है और आग्नि है
धर्म।
में "पर्वत उद्देश्य है पर्वत आगयुक्त है।" इस
वाक्य में पर्वत और आग में विधेय
और आग में आधार - आधेय
सम्बन्ध बतलाया गया है।
पर्वत उद्देश्य है इसलिए पर्वत का अर्थ
जानने के लिए उद्देश्य अवच्छेदक
का प्रयोग किया जाता है। आग विधेय
है इसलिए आग का अर्थ जानने के लिए
विधेय अवच्छेदकता का प्रयोग किया
जाता है। अतः इस वाक्य का अर्थ
होगा — (1) एक निश्चित स्थान अर्थात्
निश्चित समय में उद्देश्यावच्छेदक रूपी
पर्वत संयोग सम्बन्ध से विधेयाव-
च्छेदक रूपी आग द्वारा आगयुक्त
है। (एतद् देशावच्छेदेन एतत्
कालावच्छेदेन संयोग सम्बन्धावच्छेदेन
उद्देश्यावच्छेदेन पर्वतः विधेयावच्छेदेन
वह्निमान।) (11) सभी देश और सभी
काल में उद्देश्यावच्छेदक रूपी पर्वत
समवाय सम्बन्ध से विधेयावच्छेदक
रूपी आग द्वारा आगयुक्त है।
(सर्व देशावच्छेदेन सर्व कालावच्छेदेन
समवाय सम्बन्धावच्छेदेन उद्देश्याव-
च्छेदेन पर्वतः विधेयावच्छेदेन
वह्निमान।) ठीक यदि "पर्वत
आगयुक्त है।" वाक्य को देखें
क्योंकि पर्वत धुआँयुक्त है।

वाक्य द्वारा सिद्ध किया जाता है तो प्रथम वाक्य में आग साध्य है, दूसरे वाक्य में धुआँ हेतु है तथा दोनों वाक्यों में पर्वत पक्ष है। यहाँ "पर्वत आगवान है" का अर्थ होगा एक निश्चित देश या सभी देश और एक निश्चित काल या सभी काल में पर्वतरूपी पक्षावच्छेदक संयोग या समवाय सम्बन्ध से आगरूपी साध्यावच्छेदक से युक्त है। किन्तु "पर्वत आगयुक्त है इसलिए पर्वत धूमयुक्त है।" वाक्य होगा। अर्थात् तो प्रथम वाक्य में आग हेतु है, दूसरे वाक्य में धुआँ साध्य है, तथा दोनों वाक्यों में पक्ष पर्वत है। अतः "पर्वत धूमयुक्त है" का अर्थ होगा कि एक विशेष देश और एक विशेष काल या सभी देश और सभी काल में पर्वतरूपी पक्षावच्छेदक संयोग या समवाय सम्बन्ध से धुआँरूपी हेत्वावच्छेदक से युक्त है। इसप्रकार विभिन्न अवच्छेदकताएँ एक ही शब्द या पद के अनेक अर्थ को स्पष्ट करती हैं। जिसप्रकार एक नारी विभिन्न सम्बन्धों से माँ, पत्नी, पुत्री, वधू आदि होती है, उसीप्रकार एक ही पद आग विभिन्न सम्बन्धों से उद्देश्य, विधेय, हेतु, साध्य बन जाता है। उद्देश्य की दृष्टि से विधेय, हेतु की दृष्टि से साध्य और ~~[illegible]~~ साध्य की दृष्टि

13 MAY

हेतु बन जाती हैं।

(2) विशेष्यता – प्रकारता –

विशेष्यता 'विशेष्य' शब्द का भाववाचक
पद है। विशेष्य वह है जो किसी का
विशेष्य होता है। वह ऐसा होता है। विशेषण
प्रकार विशेषण माना जाता है। विशेषण
उसे कहते हैं जो विशेष्य के गुण को बतलाता है।
है। जो विशेष्य के गुण को बतलाता है
उसे ही विशेषण या प्रकार कहा जाता
है। विशेषण या प्रकारता का भाववाचक
पद विशेषणता या प्रकारता
है। विशेष्य का भाववाचक पद विशेष्यता
कहलाता है। विशेष्यता के ही तीन तत्त्व
अथवा विषयता में तीन तत्त्व
पाये जाते हैं — विशेष्यता, प्रकारता
(विशेषणता) तथा संसर्गता। विशेषण
और विशेष्य के संबन्ध को ही
संसर्गता कहा जाता है। नव्य-
न्याय के अनुसार विशेषण का अर्थ
उतना ही मात्र नहीं है जितना
व्याकरण में बतलाया जाता है।
विशेषण का प्रयोग व्यापक अर्थ
में किया जाता है। इसका प्रयोग
संज्ञा, क्रिया, अव्यय आदि के रूपों
में भी किया जाता है। जैसे – "नीलः
घटः" (नीला घड़ा) वाक्य में
'नीला' शब्द इस घड़ा को अन्य
घड़ा जो नीला नहीं है उससे
अलग करता है। नीला विशेषण
को नीलेतर घड़ा से नीला

वस्तु को अलग करना ही व्यावर्तन है और विशेषण अलग करता है। इसलिए विशेषण (-गैरा) व्यावर्तक है। दूसरे शब्दों में निराकरण द्वारा विशेष्य का व्यावर्तन करना ही विशेषण का काम है।

यद्यपि विशेषण विशेष्य में निहित रहता है और एक (विशेष्य) को द्रव्य तथा दूसरे (विशेषण) को गुण कहा जाता है फिर भी दोनों में व्यापक अन्तर नहीं है। विशेषण का प्रयोग विशेष्य के रूप में और विशेष्य का प्रयोग विशेषण के रूप में किया जाता है। विशेष्य-विशेषण भाव ही सभी ज्ञान को निर्धारित करता है। किसी वस्तु या पद को जानने का अर्थ है कि उसे किसी-न-किसी विशेषण द्वारा जानना अर्थात वस्तु या पद की विशेषता को जानना। एक वस्तु की भिन्नता अन्य वस्तु से उसकी विशेषता के आधार पर ही जानी जाती है। इसलिए विशेषण को 'प्रकार' भी कहते हैं। संसार की सभी वस्तुएँ एक ही प्रकार की नहीं होती बल्कि विभिन्न प्रकार की होती हैं। वस्तुओं में प्रकार भेद विशेषणता के कारण ही होता है। इसलिए विशेषणता को प्रकारता कहा जाता है।

विशेष्य और विशेषण के बीच जबतक संसर्ग नहीं होता है, तबतक किसी वाक्य या पद का अर्थ स्पष्ट

जाना भी नहीं हो सकता अथवा अग्नि से
दो पत्थर नहीं जा सकता। यह संसर्ग
अस्थायी नहीं होता है — संयोग और
संयोग सम्बन्ध (संसर्ग)
अस्थायी और तात्कालिक होता है जैसे
जमीन पर घड़ा है। इस वाक्य में
जमीन और घड़ा में संयोग संसर्ग पाया
जाता है। जमीन विशेष्य है और उसका
विशेषण घड़ा होता है। लेकिन
आवश्यक नहीं है कि घड़ा हमेशा
जमीन पर रहे। अतः जमीन के साथ
घड़ा का तात्कालिक और अस्थायी
सम्बन्ध होता है परन्तु "घड़ा नीला है"
वाक्य में घड़ा विशेष्य और इसका
विशेषण "नीला" है। नीला घड़ा में
"नीला" हमेशा निहित रहता है। अतः
यहाँ घड़ा (विशेष्य) और नीला
(विशेषण) में स्थायी संसर्ग होता है।
स्थायी और अपरिवर्तनशील सम्बन्ध
(संसर्ग) को ही समवाय संसर्ग
कहा जाता है।

(3) आधारता — आधे-
यता — "पर्वत अग्नियुक्त है।"
इस वाक्य में पर्वत आधार है
और अग्नि आधेय। आधार
वही होता है जिसपर कोई वस्तु टिकी
रहती है और आधेय वह है जो
किसी आधार के बिना नहीं रहता।
अतः संसार में पायी जानेवाली
वस्तुएँ आधार — आधेय रूप

आधेय में सत्ता निहित रहती है। आधार आधेय सम्बन्ध दो प्रकार का होता है — (1) व्याप्यवृत्ति और (2) अव्याप्यवृत्ति।

(1) व्याप्यवृत्ति वह है जिसमें आधेय सम्पूर्ण आधार में व्याप्त रहता है। जैसे तिल में तेल। तेल तिल के सम्पूर्ण भाग में विद्यमान रहता है। (2) अव्याप्यवृत्ति वह है जिसमें आधेय आधार के एक देश में व्याप्त रहता है। जैसे पेड़ पर बन्दर। बन्दर पेड़ की किसी एक डाली पर बैठा है, सम्पूर्ण पेड़ पर नहीं। अतः पेड़ और बन्दर में डाल के सम्बन्ध से संयोग होता है, जड़ के सम्बन्ध से नहीं।

आधार-आधेय का सम्बन्ध न केवल व्याप्यवृत्ति अव्याप्यवृत्ति या गुण-अभाव के बजाय सामान्य विशिष्ट अर्थ में ही देखा जा सकता है, बल्कि सामान्य और विशेष भाव-अभाव रूप में भी देखा जा सकता है।

(4) अनुयोगिता - प्रतियोगिता —

जिस आधार में अभाव पाया जाता है उसे अनुयोगी कहते हैं। आधार में जिस आधेय (वस्तु) का अभाव रहता है उसे प्रतियोगी कहते हैं।

जैसे:- (1) जमीन पर घड़ा नहीं है। यहाँ जमीन अनुयोगी है, अर्थात् उसमें अनुयोगिता है, घड़ा का अभाव अवच्छेदक

इसमें प्रतीति में प्रतियोगी है (अभिमत है) घड़ा का। प्रतियोगिता अवच्छेदक का अवलोपन जिस अवच्छेदक से होता है वह घटत्व है। घटत्व प्रतियोगिता अवच्छेदक है। घटत्व ही घड़ा को अ-घड़ा (अन्य वस्तुओं) से अलग करता है। इसलिए घटत्व को व्यावर्तक कहते हैं। इसी तरह कभी-कभी विशेषण व्यावर्तक होता है। मिट्टी से बने घड़ाओं में मार्त्तिकत्व होता है किन्तु अन्य द्रव्य (यथा सोना) से बने घड़ाओं में मार्त्तिकत्व नहीं होता है। अतएव मार्त्तिकत्व रूप में अवच्छेदकता की वृत्ति न्यून है। घटत्व के रूप में अवच्छेदकता की वृत्ति अधिक है। न्यून वृत्ति और अधिक वृत्ति को अवच्छेदकता नहीं माना जा सकता है। वस्तुतः अवच्छेदक (घटत्व) को अवच्छेद्य (घड़ा) के साथ सम व्याप्तिक होना चाहिए न कम व्याप्ति और न अधिक व्याप्ति। अतः अवच्छेदकता की विशेषता, "अन्यूनानतिरिक्त वृत्ति" है।

(5) कारणता - कार्यता - कारणकार्य सम्बन्ध को समझाने के लिए भी अवच्छेदकता का प्रयोग होता है। कपड़ा (पट) का कारण धागा (तन्तु) है। कपड़ा कार्य है। धागा में द्रव्यत्व रूपत्व आदि पाये जाते हैं। फिर भी द्रव्यत्व या रूपत्व कारण के रूप में अवच्छेदक नहीं कहला सकता, क्योंकि ये केवल कपड़ा के कारण धागा में ही निहित नहीं

[illegible] आत्मा [illegible] के कारण
कारण भी नहीं रहते हैं। कारणता भी
[illegible] रीति जाती है। [illegible]
[illegible]
भी [illegible] नहीं होते हैं। अतः [illegible]
कारणतावच्छेदक [illegible] भी हो सकती है
[illegible] कोई [illegible] है।
[illegible] कारणतावच्छेदक [illegible] कारणता
है। इसी प्रकार घट की कारणता
दण्ड में पायी जाती है। अतः घट का
कारणतावच्छेदक है। इसी प्रकार घट की
कारणता दण्ड में पायी जाती है। अतः
घट की कारणतावच्छेदक दण्डत्व है
दण्ड का व्यक्तित्व नहीं। तात्पर्य यह
है कि घट का कारण दण्ड मात्र होता है
न कि यह दण्ड या वह दण्ड।

अवच्छेदकता का प्रयोग
कारण सामग्री के विभिन्न अवयवों
को जानने के लिए भी होता है। जैसे-
आँखों के साथ किसी वस्तु का संयोग
होना प्रत्यक्ष का कारण है। लेकिन
प्रत्यक्ष तभी होता है जब वस्तु का
आकार (रूप) हो और पर्याप्त
रोशनी हो। अतः प्रत्यक्ष का कारण रूप
से अवच्छिन्न प्रकाश के संयोग से
युक्त वस्तु का आँखों से युक्त
संयोग प्रत्यक्ष का कारण है-
रूपावच्छिन्न प्रकाश संयोगावच्छिन्न
चक्षु संयोग।

(6) सांसर्गिता :— पदार्थों के आपसी सम्पर्क या सम्बन्ध है। सम्बन्ध किन्हीं दो वस्तुओं या पदों में पाया जाता है। दो वस्तुएं या पद किसी आधार पर रहती हैं। यदि सम्बन्धी एक ही आधार पर रहती है तो वह आधार समानाधिकरण कहलाता है। जब दो वस्तुएं एक ही आधार पर नहीं रहती हैं तो उस आधार को व्याधिकरण कहते हैं। अतः आधार की दृष्टि से सम्बन्ध दो प्रकार का होता है — (1) समानाधिकरण सम्बन्ध तथा (ii) व्याधिकरण सम्बन्ध

(i) समानाधिकरण सम्बन्ध वह है जिसमें दो वस्तुएं एक ही आधार में रहती हैं। जैसे — घट में घटत्व और द्रव्यत्व का होना। जहाँ आधार एक है — घट इसमें दो अलग-अलग सामान्य (घटत्व, द्रव्यत्व) स्थित हैं। (ii) व्याधिकरण सम्बन्ध वह है जिसमें दो वस्तुएं एक ही आधार में नहीं रह सकते हैं। जैसे — मनुष्यत्व और पशुत्व। इन दोनों का आधार एक नहीं है। मनुष्यत्व मनुष्य में रहता है। मनुष्य मनुष्यत्व का आधार है। पशुत्व पशु में रहता है। पशु पशुत्व का आधार है। समानाधिकरण सम्बन्ध में घट में घटत्व, द्रव्यत्व, पृथ्वीत्व आदि वर्तमान हैं, लेकिन घट को समझने के लिए 'घटत्व' नामक अवच्छेदक का ही प्रयोग होता है। अवच्छेदकता समव्यापिका होती है।